Sanginee

संगिनी

Smile... Stride... Scintillate

अक्टूबर-दिसम्बर 2023

नालको NALCO

Editor-in-Chief
Sasmita Patra, President
NALCO Mahila Samiti

Editorial Board
Shaswati Mohanty
Swayamprava Rath
Himanshu Rai

Co-ordinator
Kamana Singh

Design concept
Bibhu Prasad

October to December

प्रकाशक
नालको महिला समिति के
संयुक्त प्रयास से राजभाषा प्रकोष्ठ,
नेशनल एल्यूमिनियम कंपनी लिमिटेड
निगम कार्यालय, भुवनेश्वर

संपादकीय

'आइए आशाएँ संजोएँ!'

सर्वप्रथम आप सबको नव वर्ष 2024 तथा हमारे नालको के 44वें स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ। नववर्ष के अवसर पर हम अक्सर संकल्प लेते हैं, आने वाले वर्ष हेतु अपने लक्ष्य निर्धारित करते हैं, स्वयं हेतु एक पथ का निर्माण करते हैं, आशाएँ संजोते हैं। किंतु यह भी सत्य है कि हमारे संकल्प, हमारी आशाएँ तभी पूर्ण होती हैं, जब अनुशासन और आत्मबल का परिचय दिया जाता है।

पिछले वर्ष में हमारे देश ने कई लक्ष्यों को हासिल किया, कई आशाओं को पूरा किया। आने वाले वर्ष 2024 भी हम सबके लिए कई मायनों में अत्यधिक महत्व का होने वाला है। नववर्ष के सुअवसर पर मै आशा करती हूँ कि यह वर्ष सभी के लिए सुख और समृद्धि लेकर आए, वहीं राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय मंच पर भी हम कई मुकाम हासिल करें।

पिछले कुछ समय से खबरों में कोरोना वायरस के नए वेरिएंट जेएन1 की खबरे आनी शुरू हो गयी हैं, हमने इस महात्रासदी को झेला है। अत: मैं इस सम्पादकीय के माध्यम से आप सभी सुधी पाठकों से अपने स्वास्थ्य के प्रति विशेष सचेत रहने का आग्रह भी करती हूँ। वास्तव में हमारा स्वास्थ्य ही हमारी सबसे बड़ी सम्पदा है। उत्तम स्वास्थ्य होने पर ही हम अपनी कल्पनाओं, विचारों, आशाओं को पंख प्रदान कर सकते हैं। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि तम के विरूद्ध ज्योति की, असत के विरूद्ध सत की और मृत्यु के विरूद्ध अमृत्व की हमारी शाश्वत व अक्षुण्ण आकांक्षा ही जीवन पथ पर हमारा पाथेय है।

वर्तमान अंक में आपके सम्मुख हमने त्यौहारों के रंगों के साथ-साथ घरेलु नुस्खों पर विचार व्यक्त किए हैं, तो भ्रष्टाचार को मिटाने की आशा के साथ नन्हें सितारों पर भी कुछ पक्तियाँ रची हैं, तो वहीं जीवन पर दार्शनिक विचार भी साझा किए हैं। मुझे पूरी आशा है कि आप सभी को हमारे प्रयास पर गर्वानुभूति होगी तथा भविष्य में भी आपका साथ इसी प्रकार प्राप्त होता रहेगा।

अंत में, मैं भगवान जगन्नाथ के श्रीचरणों में अराधना करती हूँ कि नववर्ष 2024 आप सभी के लिए मंगलकारी, कल्याणकारी होने के साथ-साथ उत्तम स्वास्थ्य एवं अपार हर्ष दायक हो।

सस्मिता पात्रा

ସଂପାଦକୀୟ

ଆସନ୍ତୁ ଆମେ ସ୍ୱପ୍ନ ସଜାଡ଼ିବା !

ସର୍ବ ପ୍ରଥମେ ଆପଣ ସମସ୍ତଙ୍କୁ ନବବର୍ଷ ୨୦୨୪ ତଥା ୪୪ ତମ ନାଲ୍‌କୋ ସ୍ଥାପନା ଦିବସ ଉପଲକ୍ଷେ ଅନେକ ଅନେକ ଅଭିନନ୍ଦନ ଓ ହାର୍ଦ୍ଦିକ ଶୁଭକାମନା ।

ନବବର୍ଷରେ ଆମେ ଆଗାମୀ ଦିନ ପାଇଁ, ନିଜ ପାଇଁ ସଂକଳ୍ପବଦ୍ଧ ହେଉ । ନୂତନ ଆଶାକୁ ସଜେଇ ଥାଉ କିନ୍ତୁ ଆମ ଆଶା, ଆମ ସ୍ୱପ୍ନ, ଆମ ସଂକଳ୍ପ ସେତେବେଳେ ହିଁ ସାକାର ହେବ ଯେତେବେଳେ ଆମ ଆତ୍ମବଳ ଓ ଆମ ଅନୁଶାସନ ହିଁ ଆମ ପରିଚୟ ହେବ ।

ବିଗତ ବର୍ଷରେ ଆମ ଦେଶ କେତେ ମହାନ ଲକ୍ଷ୍ୟ ସବୁ ହାସଲ କରିଛି, କେତେ ଆଶାକୁ ପୂର୍ଣ୍ଣ କରିଛି । ନବବର୍ଷ ୨୦୨୪ ଆମପାଇଁ ଅଧିକ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ । ନବବର୍ଷର ଶୁଭ ଅବସରରେ ମୋର ଆଶା ଏହି ବର୍ଷ ଆପଣ ସମସ୍ତଙ୍କ ପାଇଁ ମଙ୍ଗଳମୟ ହେଉ । ସୁଖ, ସମୃଦ୍ଧି ଆଣି ଦେଉ । ଆମ ଦେଶ ଅନ୍ତଃରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ ମଞ୍ଚରେ ମଧ୍ୟ ପ୍ରତିଷ୍ଠା ଲାଭ କରୁ ।

କିଛିଦିନ ତଳେ କରୋନା ଭାଇରସ୍‌ର ଏକ ନୂଆ ଭାରିଆଣ୍ଟ୍ ଜେଏନ୍ ଆସିବାର ଖବର ମିଳିଛି । ଆମେ ଆଗରୁ ଏହି ମହାମାରୀ ସହ ଯୁଝି ସାରିଛେ । ତେଣୁ ଏହି ସମ୍ପାଦକୀୟ ଜରିଆରେ ମୋର ପ୍ରିୟ ସୁଧି ପାଠକଙ୍କୁ ବିଶେଷ ଅନୁରୋଧ କି ଆପଣ ନିଜ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ପ୍ରତି ଯତ୍ନଶୀଳ ରହିବେ । ବାସ୍ତବରେ ଆମ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ହିଁ ଆମର ସବୁଠୁ ବଡ଼ ସମ୍ପଦ । ଉତ୍ତମ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ହେଲେ ହିଁ ଆମେ ଆମ କଳ୍ପନା, ଆମ ବିଚାର ତଥା ଆମ ଆଶାମାନଙ୍କୁ ଡେଣା ଦେଇ ପାରିବା ।

ତମର ବିରୁଦ୍ଧ ଜ୍ୟୋତି, ଅସତ୍‌ର ବିରୁଦ୍ଧ ସତ ଓ ମୃତ୍ୟୁର ବିରୁଦ୍ଧ ଅମୃତ ହିଁ ଶାଶ୍ୱତ । ଏହି ଆଶା ଆକାଙ୍‌କ୍ଷା ହିଁ ଆମ ଜୀବନର ପାଥେୟ ହେଉ ।

ସଙ୍ଗିନୀର ଏହି ବିଶେଷ ଅଙ୍କରେ ଆମେ ଆମ ପର୍ବ-ପର୍ବାଣୀର ରଙ୍ଗ, କିଛି କିଛି ଘରୋଇ ଉପକାର ଭ୍ରଷ୍ଟାଚାରକୁ ହଟାଇବାର ପ୍ରୟାସ, କୁନି କୁନି ତାରାଫୁଲଙ୍କ ପାଇଁ ପଙ୍‌କ୍ତି ସଜାଡ଼ିଛୁ । ଜୀବନର ଦାର୍ଶନିକ ବିଚାର ମଧ୍ୟ ସ୍ଥାନିତ କରିଛୁ । ଆଶା କରୁଛି ଆମର ଏ ଛୋଟ ପ୍ରୟାସ ଆପଣଙ୍କୁ ଆନନ୍ଦ ଦେବ ଓ ଗର୍ବ ଅନୁଭୂତ କରାଇବ । ଭବିଷ୍ୟତରେ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ସଙ୍ଗ, ସହଚର୍ଯ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ ବୋଲି ମୋର ପୂର୍ଣ୍ଣ ବିଶ୍ୱାସ ।

ପରିଶେଷରେ ମୁଁ ଜଗତର ନାଥ ଜଗନ୍ନାଥଙ୍କ ଶ୍ରୀଚରଣରେ ଏତିକି ପ୍ରାର୍ଥନା କରୁଛି- ନବବର୍ଷ ୨୦୨୪ ଆପଣମାନଙ୍କ ପାଇଁ କଲ୍ୟାଣକାରୀ ହେଉ । ଉତ୍ତମ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ, ହର୍ଷ ଉଲ୍ଲାସ ଆଣି ଦେଉ ।

ସସ୍ମିତା ପାତ୍ର

नन्हे सितारे

टिमटिमाते इन तारों को
जमीन पे उतरते देखा है,
खिलखिलाते इन फूलों को
आंगन में महकते देखा है।
वह नन्हे कदम... वह नन्हे उस्ताद...
जिनके बिन यह घर सूना सा लगे,
जिनके बिन यह जग बेरंग सा लगे।

छोटी-छोटी चीजों से,
टूटे-फूटे खिलौनों से,
खुशी के पल जो ढूँढ ही लेते, वह यही तो हैं,
हमारे नन्हे-मुन्ने सितारे, जिनसे रौशन है
यह जग पूरा सारे।

अपनी शरारतों के किस्से जो बनाते,
अपनी हर बदमाशियों से झूठे तिगड़म जो बनाते।
क्या सही, क्या गलत, सबसे परे, सबसे जुदा
है इनके कारनामें।

इनके बिना हर त्यौहार है फीका सा,
इनके बिना हर महफ़िल न सजती पूरी।
कुछ अलग, कुछ न्यारे हैं जो इनके मिज़ाज।
आज की यह नन्ही कलियाँ, आज के ये नन्ही पंक्षियाँ।

पंख पसारे, उड़ते-झूमते, खिलखिलाते
न जाने कितने डालों पे, महकेंगे-चहकेंगे
न जाने कितने आंगन में।
सारा भविष्य है इनसे जुड़ा।
जग की सारी गरिमा है इन पर टिकी।

बहुत कुछ है सीखना,
इनको बहुत कुछ है देखना,
सभ्यता-संस्कृति से आचार-व्यवहार तक
सब में है निपुण बनना।

भेद-भाव को पीछे छोड़ पढ़ना है जो
संस्कार के सारे पाठ।
तभी तो कर पाएंगे चुनाव,
सही राह का, सही दिशा का।

मुमकिन तभी तो होगा,
इन कोमल कलियों का सफ़र।
आखिर सफ़ल तभी तो होगा,
एक उज्ज्वल भविष्य का सफर।

स्वाति सुनीता महापात्र
अनुगुळ

भ्रष्ट मुक्त भारत – मेरा सपना

भ्रष्टाचार एक रोग है,
इसको न बढ़ने दें,
न भ्रष्ट हों, न होने दें।

भ्रष्टाचार के खिलाफ़
इस अभियान में,
ख़ुद को शामिल करें,
भ्रष्टाचार मुक्त भारत का
सपना साकार करें।

ईमानदारी है राष्ट्र की शान,
इससे होता है देश महान।

पहले बनें ख़ुद ईमानदार,
तभी दूर होगा, देश से भ्रष्टाचार।
ईमानदारी है सबसे मूल्यवान,
अच्छे इंसान की यह पहचान।

ईमानदार होने का खाएँ संकल्प,
समृद्ध भारत का यही है विकल्प।

स्नेहा पात्र
दामनजोड़ी

मैं अमीर नहीं पर गरीब भी कहाँ हूँ

मैं अमीर नहीं हूँ पर,
गरीब भी कहाँ हूँ,
दो वक़्त की रोटी मिल जाती है
भूख मिटाने को,
और कुछ कपड़े मिल जाते हैं
तन छुपाने को,
कम से कम घर की छाँव तो
नसीब होती है।
धूप और बारिशों में,
कम से कम सपने तो
दम नहीं तोड़ते,
यों ही सिर्फ ख्वाहिशों में,
पैदल चलते चलते थक जाऊँ,
तो गाड़ी ले लूँ इतनी हैसियत है।
मेले में पसंद की चीजें
खरीदने के लिए,
जेब में पैसे हैं,
उफ्फ यही खैरियत है।
मेरी स्कूल की इमारत बड़ी नहीं,
पर शिक्षा मिल जाती है,
कॉन्वेंट सी खिट पिट अंग्रेजी न सही,
पर मातृभाषा से भी
काम चल जाता है।
केक काट लेती हूँ जब भी,
जन्मदिन की रात होती है,
और जन्मदिन याद है ये ही क्या,
कम बड़ी बात होती है!
रो लेती हूँ और मुस्कुरा भी लेती हूँ,
क्योंकि हर बात के पीछे
एक वज़ह होती है,
यादें अच्छी हो या बुरी,
कम से कम जिंदगी में
उसके लिए जगह होती है।
शानो-शौकत भरी नहीं है
जिंदगी पर,
बदहाली के करीब भी कहाँ हूँ,
मैं अमीर नहीं पर,
गरीब भी कहाँ हूँ।

स्वाति तिवारी
अनुगुळ

दादी माँ के नुस़्खे

आज के आधुनिक युग में सभी इतने व्यस्त होते हैं कि थोड़ा सा भी बीमार या सर्दी जुकाम होने पर भी दवाईयां खाना ज्यादा उचित समझते हैं और घरेलू नुस़्खों से परहेज़ करते हैं। परंतु यह नुस़्खे बहुत ही कारगर होते हैं और लाभप्रद होते हैं। हमें इन नुस़्खों को अपने जीवन में अपनाना चाहिए जिससे हमारा जीवन स्वस्थ और काया निरोगी रहेगी। आज ये नुस़्खे धीरे-धीरे लुप्त होते जा रहे हैं और उनके जगह दवाईयां अपने स्थान बना रही हैं। पर अगर हम अपने जीवन में छोटे-छोटे बदलाव लाए और अच्छी आदतों को अपनाए, तब हम स्वस्थ एवं निरोगी रह सकते हैं।

आज के जीवन शैली से सभी बीमार हो रहे हैं जो बीमारियाँ पहले बुढ़ापे में होती थी अब वही बीमारियाँ युवाओं को हो रही हैं। पहले हम दादी के नुस़्खे से ठीक हो जाते थे पर अब इन दादी के नुस़्खों को कोई नहीं अपनाता है। आप इन नुस़्खों को अपनाए और अपने जीवन शैली को बेहतर बनाएं।

1) सोयाबीन बड़ी को 2 घंटे भिगो कर मसल कर ज़हरीली झाग निकाल कर ही प्रयोग करें।

2) रसोई में एग्जास्ट फैन जरूरी है, ताकि प्रदूषित हवा बाहर निकल जाए।

3) काम करते समय स्वयं को अच्छा लगने वाला संगीत चलाएँ। खाने पर भी अच्छा प्रभाव आएगा और थकान भी कम होगी।

4) देसी गाय के घी का प्रयोग करें। इससे अनेक रोग दूर होंगे तथा साथ ही वजन नहीं बढ़ता है।

5) ज्यादा से ज्यादा मीठी नीम/ करी पत्ती अपने सब्जियों में डालें, सभी का स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

6) ज्यादा से ज्यादा चीजें लोहे की कढ़ाई में ही बनाएं, इससे आयरन की कमी किसी को नहीं होगी।

7) भोजन का समय निश्चित करें। पेट ठीक रहेगा। भोजन के बीच बात न करें। भोजन ज्यादा पोषण देगा। केवल सेंधा नमक प्रयोग करे। थायराइड, बीपी और पेट ठीक होगा।

8) केवल स्टील के कूकर ही प्रयोग करें।

9) रिफाइंड तेल के बजाए केवल तिल, मूंगफली, सरसों और नारियल का प्रयोग करें। रिफाइंड में बहुत रसायन होते हैं, जो शरीर में कई तरह की बीमारियां पैदा करते हैं।

10) नाश्ते में अंकुरित अन्न शामिल करें, पोषक विटामिन और फाइबर मिलेंगे।

11) सुबह के खाने के साथ देशी गाय के दूध का बना ताजा दही लें, पेट ठीक रहेगा।

12) चीनी कम से कम प्रयोग करें, ताउम्र हड्डियां ठीक रहेंगी।

13) चीनी की जगह बिना मसाले का गुड़ या देशी शक्कर ले।

14) छौंक में राई के साथ कलौंजी का भी प्रयोग करें।

15) चाय की जगह आयुर्वेदिक पेय की आदत बनाएं व निरोग रहें।

16) करेला, मेथी और मूली यानि कड़वी सब्जियां भी खाएं, रक्त शुद्ध रहेगा।

17) मटके से ज्यादा ठंडा पानी न पिएं, दांत ठीक रहेंगे।

18) प्लास्टिक रसोई से हटाएं ये कैंसर के बड़े कारक हैं।

19) माइक्रोवेव ओवन का प्रयोग कैंसर कारक है।

20) खाने की ठंडी चीजें कम से कम खाएं, ये पेट और दांत को खराब करती हैं।

21) तली चीजें छोड़ें, वजन नियंत्रित और एसिडिटी ठीक रहेंगी।

22) मैदा, बेसन, छोले, राजमा और उड़द कम खाएं, गैस की समस्या से बचेंगे।

23) अदरक, अजवायन का प्रयोग बढ़ाएं, गैस और शरीर के दर्द कम होंगे।

24) रात को आधा चम्मच त्रिफला एक कप पानी में डाल कर रखें। सुबह कपड़े से छान कर इस जल से आंखें धोएं, चश्मा उतर जाएगा। छानने के बाद जो पाउडर बचे उसे फिर एक गिलास पानी में डाल कर रख दें। रात को पी जाएँ। पेट साफ होगा कोई रोग एक साल तक नहीं रहेगा।

25) रात का भिगोया आधा चम्मच कच्चा जीरा सुबह खाली पेट चबा कर वही पानी पिएं एसिडिटी (गैस) खत्म।

26) एक्यूप्रेशर वाले पिरामिड प्लेटफार्म पर खड़े होकर खाना बनाने की आदत बना लें तो भी सब बीमारियां शरीर से निकल जायेंगी।

27) सर्दी में बाहर जाते समय 2 चुटकी अजवायन मुंह में रखकर निकलिए, सर्दी से नुकसान नहीं होगा।

28) रस निकले नींबू के चौथाई टुकड़े में जरा सी हल्दी, नमक व फिटकरी रख कर दांत मलने से दांतों का कोई भी रोग नहीं रहेगा।

29) कभी - कभी नमक, हल्दी में 2 बूंद सरसों का तेल डाल कर दांतों को उंगली से साफ करें, दांतों का कोई रोग टिक नहीं सकता।

30) बुखार में 1 लीटर पानी उबाल कर 250 मिली. कर लें, साधारण ताप पर आ जाने पर रोगी को थोड़ा-थोड़ा दें, दवा का काम करेगा।

31) सुबह के खाने के साथ घर का जमाया देशी गाय का ताजा दही जरूर शामिल करें, यह प्रोबायोटिक का काम करेगा।

कविता कुमारी
भुवनेश्वर

ହୃଦୟର ସମ୍ପର୍କ

ଆଜି ଶିକ୍ଷାର ମନ ଭାରି ଖୁସି। ତାନିନାନୀ ବିବାହର ପୁରା ବର୍ଷେ ପରେ କାଲି ଘରକୁ ଆସୁଛି। ଗତ ବର୍ଷ ବାହାଘରର ମାତ୍ର ପନ୍ଦର ଦିନ ପରେ ଭାଇନା ଓ ନାନୀ ସିଙ୍ଗାପୁର ଚାଲିଯାଇଥିଲେ, ଭାଇନାଙ୍କ କର୍ମସ୍ଥଳକୁ। ମଝି ମଝିରେ କଥା ହେଲେ ମଧ୍ୟ ଶିକ୍ଷାର ମନ ବୁଝୁ ନ ଥିଲା। ଦୁଇ ଭଉଣୀଙ୍କ ମଧ୍ୟରେ ପାଞ୍ଚ ବର୍ଷର ଫରକ ହେଲେ ମଧ୍ୟ ଦୁଇ ଜଣଙ୍କ ସମ୍ପର୍କ ଅତ୍ୟନ୍ତ ନିବିଡ଼ । ଭଉଣୀଠୁ ବେଶୀ ଦୁହେଁ ବାନ୍ଧବୀ। ନିଜ ମନର ସବୁ କଥା ଶିକ୍ଷା, ତାନି ନାନୀ ଆଗରେ କୁହେ ଏବଂ ନାନୀ ମଧ୍ୟ ଧୈର୍ଯ୍ୟର ସହ ଶୁଣି ତା'ର ପ୍ରତି ସମସ୍ୟାର ସମାଧାନ କରିଦିଏ।

ଆଜି ଶିକ୍ଷାକୁ ପୂର୍ବର ସବୁକଥା ମନେ ପଡ଼ିଯାଉଛି। ସେମାନେ ଦୁଇ ଭଉଣୀ ଏବଂ ଗୋଟେ ଭାଇ। ସେମାନଙ୍କର ମଧ୍ୟବିତ୍ତ ପରିବାର। ମା ହାଇସ୍କୁଲରେ ଶିକ୍ଷୟିତ୍ରୀ ଥିଲେ। ତେଣୁ ଘରେ ସବୁବେଳେ ସେ ପିଲାଙ୍କ ପାଠପଢ଼ା ଉପରେ ବହୁତ ଗୁରୁତ୍ୱ ଦେଉଥିଲେ। ଶିକ୍ଷା ଓ ଭାଇ ବିକାଶ ପଢ଼ାପଢ଼ିରେ ଅତ୍ୟନ୍ତ ଭଲ ଥିବାବେଳେ, ତାନିନାନୀ ଏଭରେଜ ଷ୍ଟୁଡେଣ୍ଟ ଥିଲା। କିନ୍ତୁ ଅତ୍ୟନ୍ତ ସୁନ୍ଦରୀ ଏବଂ ଶାନ୍ତଶିଷ୍ଟ ସ୍ୱଭାବ ଯୋଗୁଁ ସମସ୍ତଙ୍କର ବଡ ପ୍ରିୟ ଥିଲା। ସିଏ ବାପା, ମାଆଙ୍କର କୌଣସି କଥା କେବେ ଅମାନ୍ୟ କରିବା ଶିକ୍ଷାର ମନେ ନାହିଁ ।

ତାନିନାନୀ ଯେତେବେଳେ ୟୁନିଭର୍ସିଟିରେ ପିଜି କରୁଥିଲା ବଡ଼ମା' ଏକ ବିବାହ ପ୍ରସ୍ତାବ ନାନୀ ପାଇଁ ଆଣିଥିଲେ। ପିଲାଟି ବଡ଼ମା'ଙ୍କ ଭାଉଜର ପୁଅ । ସେ ବହୁତ ଉଚ୍ଚ ଶିକ୍ଷିତ ଏବଂ ଏକ ବହୁରାଷ୍ଟ୍ରୀୟ କମ୍ପାନୀରେ ଉଚ୍ଚ ପଦରେ ଥିଲା। ତେଣୁ ଘରେ ସମସ୍ତଙ୍କର ବହୁତ ପସନ୍ଦ ହୋଇଥିଲା। ଯେଉଁଦିନ ପୁଅ ନାନୀକୁ ଦେଖିବାକୁ ଘରକୁ ଆସିଥିଲା କିଛି ସମୟ ସମସ୍ତେ କଥା ହେବାପରେ ନାନୀ ଓ ସେ ପୁଅକୁ ଏକୁଟିଆ କଥା ହେବା ପାଇଁ କିଛି ସମୟ ଛାଡିଦେଲେ। ପୁଅ ଗଲାପରେ ଯେତେବେଳେ ସମସ୍ତେ ନାନୀକୁ ପଚାରିଲେ କିପରି ଲାଗିଲା, ନାନୀ ପୁରା ରୋକ୍‌ଠୋକ୍‌ରେ କହିଦେଲା 'ମୁଁ ଏଠି ଜମା ବିବାହ କରିବିନି। ମତେ ଏ ପୁଅ ବିଲ୍‌କୁଲ୍ ପସନ୍ଦ ନାହିଁ।' ଏକଥା ଶୁଣି ଘରେ ସମସ୍ତେ ଆଶ୍ଚର୍ଯ୍ୟ ହୋଇଗଲେ, କାରଣ ପିଲାଟି ଉଚ୍ଚପଦସ୍ଥ, ସୁନ୍ଦର ଏବଂ ବଡ଼ଘରର ପୁଅ। କଥାବାର୍ତ୍ତା ମଧ୍ୟ ଭଲ ଲାଗୁଥିଲା। ତାକୁ ମନା କରିବାର କାରଣ କେହି ଖୋଜି ପାରୁ ନ ଥିଲେ। ବଡ଼ମା' ତ ଭୀଷଣ ରାଗିଗଲେ। ବାପା ଓ ମାଙ୍କୁ ରାଗିକରି କହିଲେ ତମେ ଦୁହେଁ ତାକୁ ବେଶୀ ଗେହ୍ଲା କରି ବିଗାଡ଼ି ଦେଇଛ। ନିଜର ଭଲ ମନ୍ଦ ସିଏ ବୁଝି ପାରୁନି, ନିଶ୍ଚୟ କାହାକୁ ଗୋଟେ ନିଜେ ଠିକ୍ କରି ରଖିଛି, ନଚେତ୍ କାହିଁକି ଏମିତି ଭଲ ପ୍ରସ୍ତାବକୁ ମନା କରନ୍ତା।

ଏହି କଥା ଶୁଣି ବାପା ତାନିନାନୀକୁ ପଚାରିଲେ ମା' ସତ କହ, କ'ଣ ବଡ଼ମା' ଯାହା କହୁଛନ୍ତି ସେଥିରେ କିଛି ସତ୍ୟତା ଅଛି କି ? ନାନୀ ଲୁହ ଭରା ଆଖିରେ ବାପାଙ୍କୁ କହିଲା ନାହିଁ ବାପା ମୁଁ ସେମିତି କାହାକୁ ଠିକ କରିନି, କିନ୍ତୁ ମୁଁ ସେ ପୁଅକୁ ଜମା ବାହା ହେବିନି।' ବାପା କହିଲେ ଠିକ୍ ଅଛି ମା', ତୁ ଜମା ବ୍ୟସ୍ତ ହବା ଦରକାର ନାହିଁ, ଯେଉଁ ଜାଗାରେ ତୋର ପସନ୍ଦ ହେବ ସେଠି ହିଁ ତୋର ବାହାଘର ହେବ। ସେହିଦିନ ବାପା ଘରେ ସମସ୍ତଙ୍କୁ କହିଲେ ଏ ବିଷୟରେ ଆଉ ଜମା ଚର୍ଚ୍ଚା ନ କରିବାକୁ ଏବଂ ତାନିନାନୀକୁ ଏହାର କାରଣ ବିଷୟରେ କିଛି ନ ପଚାରିବାକୁ। ଏହି ଘଟଣାର ଠିକ୍ ଛଅ ମାସ ପରେ ଚାର୍ଟାର୍ଡ ଆକାଉଣ୍ଟେଣ୍ଟ୍ ଶୁଭ ଭାଇଙ୍କ ସହ ନାନୀର ବିବାହ ଭାରି ଧୁମଧାମରେ ହେଇଗଲା ଏବଂ ସେ ଭାଇଙ୍କ ସହ ସିଙ୍ଗାପୁର ଚାଲିଗଲା। ଏହି ସମୟରେ ମଧ୍ୟ ଭାଇଙ୍କ ସହ ଅଧାଘଣ୍ଟା କଥା ହେଲାପରେ ନାନୀ ଆସି କହିଦେଲା ତାକୁ ଏଠି ବିବାହ କରିବାରେ କିଛି ସମସ୍ୟା ନାହିଁ। ଭାଇନା ତାକୁ ପସନ୍ଦ ହୋଇଗଲେ। କିନ୍ତୁ ଶିକ୍ଷାର ମନରେ କିଛି ପ୍ରଶ୍ନ ରହିଯାଇଥିଲା। ସିଏ ଦୁଇଟା ପ୍ରସ୍ତାବକୁ ତୁଳନା କରି କିଛି ବୁଝିପାରୁନଥିଲା ଯେ କାହିଁକି ତାନି ନାନୀ ପ୍ରଥମ ପ୍ରସ୍ତାବକୁ ମନା କରି ଏହି ପ୍ରସ୍ତାବରେ ସାଙ୍ଗେସାଙ୍ଗେ ରାଜି ହେଇଗଲା। ତା' ମତରେ ଦୁଇଟାଯାକ ପ୍ରସ୍ତାବରେ ବେଶୀ କିଛି ଫରକ ନ ଥିଲା ଏବଂ ବଡ଼ମା' ଆଣିଥିବା ପ୍ରସ୍ତାବର ପୁଅଟି ତାକୁ ଶୁଭ ଭାଇନାଙ୍କଠୁ ବେଶୀ ହ୍ୟାଣ୍ଡସମ ଲାଗୁଥିଲା। ଯେହେତୁ ନାନୀ ମଧ୍ୟ ବହୁତ ସୁନ୍ଦର ତେଣୁ ତାକୁ ଲାଗୁଥିଲା ସେହି ପୁଅ ସହ ନାନୀର ଯୋଡ଼ି ଭାରି ଭଲ ଲାଗନ୍ତା।

ସେଥିପାଇଁ ଶିକ୍ଷା ମନେମନେ ସ୍ଥିର କରିନେଲା ଯେ ଏଥର ନାନୀ ଆସିଲେ ସିଏ ନିଶ୍ଚୟ ଏହି ବିଷୟରେ ତାକୁ ପଚାରିବ। ନାନୀ ଓ ଭାଇନା ଆସି ଘରେ ପହଞ୍ଚିଲା ପରେ ଘର ହାସଖୁସିରେ ଭରିଗଲା। ମା'ଙ୍କ ଗୋଡ ତ ଆଉ ଖୁସିରେ ତଳେ ପଡୁ ନ ଥିଲା। ଖିଆପିଆ, ଗପସପ, ସାଇପଡ଼ିଶା, ସାଙ୍ଗସାଥି ସମସ୍ତଙ୍କ ସହ କଥା ସାରିଲା ପରେ ଦୁଇ ଭଉଣୀ ରାତିରେ ଛାତ ଉପରକୁ ଚାଲିଗଲେ, ମନ ଖୋଲି ଗପିବା ପାଇଁ। ସୁଯୋଗ ଦେଖି ଶିକ୍ଷା ନିଜ ମନ ଭିତରେ ଏତେ ଦିନ ହେଲା ଚାପି ରଖିଥିବା ପ୍ରଶ୍ନଟି ନାନୀକୁ ପଚାରିଦେଲା। ନାନୀ ଏହି କଥା ଶୁଣି ପ୍ରଥମେ ତ ଅବାକ୍ ହେଇଗଲା, ତାପରେ ହସି ହସି ଗଡିଗଲା। କିଛି ସମୟ ଚୁପ ରହିବା ପରେ କହିଲା ତୁ ଏତେ ଦିନ ତଳର ଏହି କଥାଟିକୁ ଆହୁରି ମନେ ରଖିଛୁ । ଆରେ ମୁଁ ଯେତେବେଳେ ସେ ପୁଅ ସହ କଥା ହେଉଥିଲି ସିଏ ପ୍ରତି କଥାରେ ମତେ କହିଲା ବାହାଘର ପରେ ମୁଁ ଚାହୁଁଛି ତମେ ଏଆ କରିବ,

ତମେ ସେ କାମ କରିବ, ତମ ପାଇଁ ଏହି କୋର୍ସ କଲେ ଭଲ ହେବ କିନ୍ତୁ ଥରେ ମଧ୍ୟ ମତେ ପଚାରିଲାନି ତମେ କଣ ଚାହୁଁଛ। ତମକୁ କ'ଣ ଭଲଲାଗେ ? ତା'ର ପ୍ରତି କଥାରେ କେବଳ ନିଜ ପସନ୍ଦ, ନିଜ ଇଚ୍ଛା ହିଁ ଥିଲା। ତେଣୁ ମୁଁ ସେହି ମୁହୂର୍ତ୍ତରେ ଅନୁଭବ କଲି ସେ ଜୀବନ ସାରା ନିଜ ହିସାବରେ ମତେ କଣ୍ଟ୍ରୋଲ କରିବ। ତା'ପରେ ଟିକେ ରହି ନାନୀ ପୁଣି କହିଲା, ଜାଣିଛୁ ମୁଁ ତାକୁ ଯେତେବେଳେ କହିଲି ମୋତେ କ୍ରିକେଟ ମ୍ୟାଚ୍ ଦେଖିବାକୁ ଭାରି ଭଲଲଗେ, ସେ କହିଲା 'ଆରେ ଝିଅପିଲା ହେଇ ଏ କ'ଣ ତମର ଅଜବ ପସନ୍ଦ।' ଏହି କଥା ଶୁଣି ମୁଁ ଜାଣିଦେଲି ଏହି ପିଲାକୁ ବିବାହ କରି ମୁଁ କେବେ ବି ଖୁସିରେ ରହିପାରିବିନି।' ଏହା ଶୁଣି ଶିଖାର ଉତ୍ସୁକତା ଆହୁରି ବଢିଗଲା। ସେ ପଚାରିଲା ତେବେ ଶୁଭ ଭାଇନାଙ୍କର କ'ଣ ଏମିତି କଥା ତତେ ଏତେ ପସନ୍ଦ ହେଲା ଯେ ତୁ ସାଙ୍ଗେସାଙ୍ଗେ ବାହା ହେବାକୁ ରାଜି ହେଇଗଲୁ ?'

ନାନୀ ହସିହସି କହିଲା 'ମୁଁ ଶୁଭଙ୍କୁ ପଚାରିଲି ଆପଣ ବିବାହ ପରେ ମୋର କ'ଣ ଚେଞ୍ଜ କରିବାକୁ ଚାହୁଁଛନ୍ତି, ତ ସିଏ କହିଲେ କିଛି ନୁହଁ। ତମେ ଯେମିତି ଅଛ ଠିକ ସେମିତି ରୁହ। ଆମେ ଦୁହେଁ ଦୁହିଁଙ୍କର ସବୁ ଭଲମନ୍ଦ ଗୁଣକୁ ହୃଦୟରୁ ଗ୍ରହଣ କରି ଆଗକୁ ବଢ଼ିବା। କିଏ କାହାକୁ କିଛି ଚେଞ୍ଜ କରିବା ଦରକାର ନାହିଁ। ଆଉ ଜାଣିଛୁ ମୁଁ ଯେତେବେଳେ କହିଲି ମତେ କ୍ରିକେଟ ମ୍ୟାଚ୍ ଦେଖିବାକୁ ଭାରି ଭଲଲାଗେ, ସିଏ ଖୁସିରେ କୁରୁଳି ଉଠି କହିଲେ ଆରେ ବାଃ, ମତେ ଏବେ ଗୋଟେ ପାର୍ଟନର ମିଳିଗଲା, ସୋଫାରେ ବସି ମ୍ୟାଚ୍ ଦେଖିବାକୁ, ଜାଣିଛ ଆଜି ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ମୁଁ ଏକୁଟିଆ ମ୍ୟାଚ୍ ଦେଖୁଥିଲି କାରଣ ଆମ ଘରେ କାହାକୁ କ୍ରିକେଟ ପସନ୍ଦ ନାହିଁ, କିନ୍ତୁ ମତେ ଏବେ କମ୍ପାନୀ ମିଳିବ। ଏହା କହିଲା ପରେ ସିଏ ଟିକେ ଲାଜେଇ ଯାଇ ମତେ ପଚାରିଲେ ତମର ଏହି ବିବାହରେ କିଛି ଆପତ୍ତି ନାହିଁ ତ ? ମୁଁ ତମର ପସନ୍ଦ ତ ? ସେହି ମୁହୂର୍ତ୍ତରେ ମତେ ଲାଗିଲା ଏହି ଲୋକଟି ମତେ ସବୁବେଳେ ଖୁସିରେ ରଖିବ। ଜାଣିନି କାହିଁକି କିନ୍ତୁ ମତେ ହୃଦୟ ଭିତରୁ ସିଏ ବହୁତ ନିଜର ପରି ଲାଗିଲେ।'

ଶିଖା ପୁଣି ପଚାରିଲା 'ଆଚ୍ଛା ନାନୀ, ମତେ ବର୍ତ୍ତମାନ ସତ କହ । ତୋର ବାହାଘରର ଏକ ବର୍ଷ ବିତିଗଲା। ତୁ ଭାଇନାଙ୍କୁ ପ୍ରଥମଥର ଦେଖି ଯାହା ଅନୁଭବ କରିଥିଲୁ ତାହା କ'ଣ ସତ ? ତୁ କ'ଣ ସତରେ ଖୁସିରେ ଅଛୁ ? ନାନୀ ହସିହସି କହିଲା ମୋ ମୁହଁ ଦେଖି ତୁ ସବୁବେଳେ ମୋ ମନର ଖୁସି, ଦୁଃଖ ସବୁ ବୁଝିଦେଉଥିଲୁ। ବର୍ତ୍ତମାନ କ'ଣ ଜାଣିପାରୁନୁ ମୁଁ ଶୁଭଙ୍କ ସହ ଖୁସିରେ ଅଛି ନା ନାହିଁ, ଯେ ମୋ ମୁହଁରୁ ଶୁଣିବାକୁ ଚାହୁଁଛୁ ?' ଶିଖା ହସିହସି ନାନୀର ଖୁସିରେ ଚମକୁଥିବା ଚେହେରାକୁ ଦେଖି ତାକୁ ଦୁଇ ହାତରେ କୁଣ୍ଢାଇ ପକାଇ କହିଲା ନାହିଁ ମ, ମୁଁ ଏମିତି ମଜାରେ ପଚାରୁଥିଲି ନା। ସିଏ ଆଜି ସତରେ ଅନୁଭବ କରିପାରୁଥିଲା, କାହା ସହ କେଉଁ ମୁହୂର୍ତ୍ତରେ ହୃଦୟର ସମ୍ପର୍କ ହଠାତ୍ ଗଢ଼ିଉଠିବ କେହି କହିପାରିବେ ନାହିଁ । ପ୍ରକୃତରେ କଥାରେ ଯାହା ଅଛି, ସ୍ୱର୍ଗରୁ ଯୋଡ଼ି ତିଆରି ହୋଇ ଏହି ପୃଥିବୀକୁ ଆସିଥାନ୍ତି।

ତନୁଶ୍ରୀ ଦାଶ
ଦାମନଯୋଡ଼ି

ଦୀପାବଳି ଛୁଟି

ଆଗକୁ ଦୀପାବଳି ଛୁଟି ଆସୁଛି। ମନଟା କାହିଁ କେଜାଣି ଖୁସିରେ ଝୁମି ଉଠୁଛି। ଅମୃତସର୍ ବୁଲିଯିବାର ଯୋଜନାଟି ସଫଳ ହେବାକୁ ଯାଉଛି। ବାପା, ମାଆ, ଭାଇ, ଭଉଣୀ ସମସ୍ତେ ମିଶି ନିର୍ଦ୍ଧାରିତ ଦିନରେ ବାହାରି ପଡ଼ିଲୁ ଅମୃତସର୍। ହୋଟେଲ୍‌ରେ ଆମର ଆଗରୁ ରହିବା ପାଇଁ ବନ୍ଦୋବସ୍ତ କରାଯାଉଥିଲା। ରାତି କେମିତି ପାହି ସକାଳ ହେବ, ଆଉ ଆମର ବୁଲିବା ଆରମ୍ଭ ହେବ, ସମସ୍ତେ ଉତ୍କଣ୍ଠିତ ହୋଇ ଚାହିଁ ରହିଥିଲୁ। ଗାଡ଼ି ଆସି ସକାଳ ନଅଟା ବେଳେ ପହଞ୍ଚିଗଲା। ପ୍ରଥମେ ଆମେ ଜାଲିଆନାବାଲାବାଗ୍ ଗଲୁ। ଏହା ପ୍ରତ୍ୟେକ ଭାରତୀୟମାନଙ୍କ ପାଇଁ ଏକ ତୀର୍ଥସ୍ଥାନ କହିଲେ ଅତ୍ୟୁକ୍ତି ହେବନାହିଁ। ଗୋଟିଏ ସଂକୀର୍ଣ୍ଣ ରାସ୍ତା ଦେଇ ଭିତରକୁ ପଶିବାକୁ ହୁଏ। ସେଇ ରାସ୍ତାଟି ଖୁବ୍ ସୁନ୍ଦର ଭାବେ ସଜା ହୋଇ ଆଗରେ ଶହୀଦ୍ ସ୍ତମ୍ଭ ଦେଖିଲୁ ଯେଉଁଠି ହଜାରେରୁ ଅଧିକା ଲୋକ, ମହିଳା, ପିଲା ସମସ୍ତେ ଟଳିପଡ଼ିଥିଲେ ଜେନେରାଲ୍ ଡାୟରଙ୍କର ସୈନ୍ୟବାହିନୀର ଗୁଳିରେ। ସେଇଠି ଆମ ସମସ୍ତଙ୍କର ମଥାନତ ହୋଇଯାଇଥିଲା। ଶହୀଦ୍ ମାନଙ୍କ ପ୍ରତି ସମ୍ମାନରେ। କଡ଼ରେ କୂପ ଯେଉଁଠି ଶହେରୁ ଅଧିକା ଲୋକ ଗୁଳିମାଡ଼ରୁ ବଞ୍ଚିବା ପାଇଁ ପ୍ରାଣ ବିକଳରେ କୂପ ମଧ୍ୟକୁ ଡେଇଁ ପଡ଼ିଥିଲେ। ପାଖରେ ଗ୍ୟାଲେରୀରେ ସେତେବେଳେ ସମସ୍ତ ଫଟୋଚିତ୍ର ପ୍ରଦର୍ଶିତ ହୋଇଛି। ଦେଶପ୍ରେମ ସଙ୍ଗୀତ ସେଠାରେ ଅନବରତ ବାଜୁଥାଏ। ସାରେ ଜାହାଁସେ ଆଚ୍ଛା... ଏ ମେରେ ୱତନ କି ଲୋଗୋଁ.... ଆହୁରି ଅନେକ କିଛି।

ଦେଶପ୍ରେମରେ ଅନ୍ତର ଭରି ଉଠୁଥାଏ। ସବୁଠାରୁ ହୃଦୟ ବିଦାରକ ଥିଲା କାନ୍ଥରେ ଥିବା ଗୁଳିର ଚିହ୍ନ, ଯାହାକି ସେତେବେଳେ ଜେନେରାଲ୍ ଡାୟରଙ୍କ ସୈନ୍ୟବାହିନୀଙ୍କର ବନ୍ଧୁକରୁ ବାହାରିଥିବା ଗୁଳି। ଆଜି ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ତାହା ସ୍ମାରକୀ ହୋଇ ରହିଛି। ଏସବୁ ଦେଖିବାପରେ ହୃଦୟ ଦୁଃଖରେ ଭରି ଯାଇଥିଲା।

ତା'ପରେ ଆମେ ବାହାରିଲୁ ସ୍ୱର୍ଣ୍ଣମନ୍ଦିର, ସ୍ୱର୍ଣ୍ଣମନ୍ଦିର ଚାରିପଟେ ଅମୃତ ସରୋବର ଘେରି ରହିଛି। ମନ୍ଦିରର ସୌନ୍ଦର୍ଯ୍ୟ ଏତେ ମନଲୋଭା ଯେ, ଦେଖିଲେ ଆଖି ଝଲସି ଉଠେ। ଦିନବେଳେ ସୂର୍ଯ୍ୟ କିରଣରେ ଚକ୍‌ମକ୍ କରୁଥାଏ ସ୍ୱର୍ଣ୍ଣମନ୍ଦିର। ରାତିବେଳା ଆଲୋକରେ ମନ୍ଦିର ସରୋବର ଝଲସି ଉଠି ମନ ପ୍ରାଣକୁ ପୁଲକିତ କରିଦିଏ। ପ୍ରବଳ ଭିଡ଼ ଭିତରେ ଆମକୁ ଯିବାକୁ ପଡ଼ିଲା। ମୁଣ୍ଡକୁ ସ୍ତ୍ରୀ, ପୁରୁଷ ସମସ୍ତଙ୍କୁ ଘୋଡ଼ାଇ ଯିବାକୁ ପଡ଼େ କପଡ଼ାରେ। ବାପା, ମାଆଙ୍କ ପାଇଁ ସ୍ୱତନ୍ତ୍ର ଧାଡ଼ି ଥିଲା। ଆମେ ସମସ୍ତେ ଗୁରୁଙ୍କ ନାମ ଜପ କରିକରି ଭିଡ଼ରେ କେତେବେଳେ ପହଞ୍ଚିଗଲୁ ମନ୍ଦିର ପାଖରେ ଜଣାପଡୁ ନ ଥାଏ। ଖୁବ୍ ସୁନ୍ଦର ଦର୍ଶନ କରି ସାରି ଉପର ମହଲା ବୁଲିବାକୁ ଗଲୁ। ସୁନ୍ଦର କାରୁକାର୍ଯ୍ୟ ଦେଖି ଆଖି ଲାଖି ରହିଯାଉଥାଏ। ରାତ୍ରୀ ଦର୍ଶନ ପରେ ଦେଖିଲୁ କିଛି ଭକ୍ତ ମନ୍ଦିର ପରିସରକୁ ସଫା କରିବାରେ ଲାଗିପଡ଼ିଛନ୍ତି। ଦେଖି ଲାଗୁଥାଏ ସମସ୍ତଙ୍କର ଯେପରି ଦାୟିତ୍ୱ ମନ୍ଦିର ପରିସରକୁ ସଫା ଓ ସୁନ୍ଦର ରଖିବା। ଲୋକମାନଙ୍କର ଅନ୍ୟକୁ ସେବା ଦେବା ମନୋଭାବ, ସେଠାରେ ଦେଖିଲେ ବହୁତ ଖୁସି ଲାଗୁଥିଲା। ଆମେ ଲଙ୍ଗର୍‌ରେ ଖାଇବାକୁ ଯିବା ସମୟରେ ବୃଦ୍ଧ ପିତା ମାତାଙ୍କୁ ନେବାକୁ କଷ୍ଟ ହେବାରୁ ସେମାନେ ସାହାଯ୍ୟ ଯୋଗାଇ ଦେଇଥିଲେ। ଲଙ୍ଗରରେ ଖାଇବାର ଅନୁଭୂତି ଭୁଲିବାର ନୁହେଁ। ବିରାଟ ହଲ୍‌ରେ ଅନେକ ଲୋକ ଏକାବେଳେ ବସି ରୁଟି, ଡାଲି, ରାଜମା, ଖିରି ଖାଇଥିଲୁ। ସମସ୍ତ ଲୋକ ସେଠାରେ ସେବା ଯୋଗାଇଥାନ୍ତି। କାହାକୁ ପାରିଶ୍ରମିକ ଦିଆଯାଏ ନାହିଁ। ନିଜର କର୍ମମୟ ଜୀବନରେ ଯାହାକୁ ଯେତେବେଳେ ସମୟ ମିଳେ ସେ ଗୁରୁଙ୍କ ମନ୍ଦିରକୁ ଚାଲିଆସେ ନିଜର ସେବା ପ୍ରଦାନ କରିବାକୁ। ଲଙ୍ଗରରେ କୌଣସି ଦେୟ ଦେବାକୁ ପଡ଼େନାହିଁ। ବହୁତ ପରିଷ୍କାର ପରିଚ୍ଛନ୍ନତାର ସହ ରୋଷେଇ କରାଯାଏ। ରୋଷେଇଶାଳା ଦେଖିବାର ସୁଯୋଗ ଆମକୁ ମିଳିଥିବାରୁ ଆମେ ନିଜକୁ ଭାଗ୍ୟବାନ୍ ମନେକଲୁ। ଏତେ ଲୋକଙ୍କ ପାଇଁ ଦିନରାତି ରୋଷେଇ ଚାଲିଥାଏ। କେହି ସେଠାରୁ ଅଭୁକ୍ତ ଫେରନ୍ତି ନାହିଁ। ସ୍ୱର୍ଣ୍ଣ ମନ୍ଦିରର ସୁନ୍ଦରତା ଓ ସେଠାକାର ଅନୁଭୂତି ଶବ୍ଦରେ ବର୍ଣ୍ଣନା କରିବା ସମ୍ଭବପର ନୁହେଁ। କେବଳ ହୃଦୟର ସହ ଅନୁଭବ କରିହେବ।

ଦ୍ୱିତୀୟ ଦିନ ଆମେ ବାହାରିଲୁ ୱାଘା ବର୍ଡରକୁ। ଆମେ ରହୁଥିବା ହୋଟେଲ୍‌ଠାରୁ ଏହା ପ୍ରାୟ ତିରିଶ ପଇଁତିରିଶ କିଲୋମିଟର ଦୂରରେ ଥିଲା। ଆମେ ସମସ୍ତେ ପ୍ରାୟ ଚାରିଟା ସମୟରେ ପହଞ୍ଚିଗଲୁ। ଟିକିଏ ଆଗରୁ ଗଲେ ଭଲରେ ବସି ଦେଖିହେବ ପତାକା ଅବତରଣ ଉତ୍ସବ। ଏଠାରୁ ପାକିସ୍ଥାନର ସୀମାରେଖା ଦେଖାଯାଏ। ତାରବାଡ଼ ପାଖରେ ଆମ ଦେଶର ଜବାନ୍‌ମାନେ ଚବିଶ ଘଣ୍ଟା ଆମର ସୀମାକୁ କଡ଼ା ପ୍ରହରା ଦେଉଛନ୍ତି। ଧ୍ୱଜା ଅବତରଣ ଉତ୍ସବର ସମୟ ଶୀତଦିନ ଓ ଖରାଦିନ ଅନୁସାରେ ପରିବର୍ତ୍ତନ ହୋଇଥାଏ। ନିର୍ଦ୍ଧାରିତ ସମୟରେ ଦୁଇ ଦେଶର ଗେଟ୍ ଖୋଲିଥାଏ। ଦୁଇ ଦେଶର ସୈନିକ ପରସ୍ପରକୁ ଅଭିବାଦନ ଜଣାନ୍ତି। ଏକ ସମୟରେ ଦୁଇ ଦେଶର ପତାକା ଅବତରଣ କରାଯାଏ। ପୁରା ସମ୍ମାନର ସହ ପତାକାକୁ ନିଆଯାଏ ତା'ପରେ ଗେଟ୍ ବନ୍ଦ କରାଯାଏ। ୱାଘା ଅଟାରୀ ସୀମା ଦେଖିସାରିବା ପରେ ହୋଟେଲ୍ ଫେରି ଆସିଲୁ। ହୃଦୟରେ ଅନେକ ଅନୁଭୂତି, ରୋମାଞ୍ଚ ଓ ଦେଶପ୍ରେମ ଭରିଯାଇଥିଲା। ଭାରତ ମାତା କି ଜୟ, ବନ୍ଦେ ମାତରମ୍ ଧ୍ୱନି କାନରେ ବାରମ୍ବାର ଗୁଞ୍ଜରିତ ହେଉଥିଲା।

ତା' ପରଦିନ ଆମର ପାର୍ଟିସନ ମ୍ୟୁଜିୟମ୍ ଦେଖିବାକୁ ଯିବାର ଥିଲା। ସକାଳୁ ସେଠାରେ ପହଞ୍ଚିଗଲୁ, ଟିକେଟ୍ କରି ଭିତରକୁ ପ୍ରବେଶ କଲୁ । ୧୯୪୭ ମସିହା ଦେଶ ବିଭାଜନ ସମୟର ଓ ତା' ପୂର୍ବର ଅନେକ ନଥିପତ୍ର ସାଇତା ହୋଇ ରହିଛି। ମହାତ୍ମା ଗାନ୍ଧୀଙ୍କର ୟଙ୍ଗ୍ ଇଣ୍ଡିଆ, ଅନେକ ପୂର୍ବତନ ଭାଇସରାଏଙ୍କ ହାତଲେଖା ଚିଠି ଦେଖିବାକୁ ମିଳିଥିଲା। ଦେଶ ବିଭାଜନ ସମୟର ଦୁଃଖଦ ଓ କରୁଣ ଫଟୋଚିତ୍ର ସେଠାରେ ଦେଖିବାକୁ ମିଳିଥିଲା। ସେଠାରେ ଦୃଶ୍ୟଶ୍ରାବ୍ୟ ମାଧ୍ୟମରେ ଅନେକ ଲୋକଙ୍କର ଅନୁଭୂତି ଶୁଣିବାକୁ ମିଳିଲା, ସେଥିରୁ ଅନେକ ଆଜି ବି ଜୀବିତ ଥିବେ କି ନାହିଁ କହି ହେବନି। ଶରଣାର୍ଥୀ ଶିବିରରେ ଅନେକ ଦୁଃଖକଷ୍ଟରେ ସେମାନେ ରହିଥିବା ବେଳର ଫଟୋଚିତ୍ର ସେଠାରେ ଅଛି। ପାର୍ଟିସନ୍ ମ୍ୟୁଜିୟମ୍ ଦେଖିବା ପରେ ଦେଶ ବିଭାଜନ ସମୟର କରୁଣ ଚିତ୍ରକୁ ହୃଦୟରେ ସାଇତି ରଖି ଫେରି ଆସିଥିଲୁ। ଅମୃତସରରୁ ପୁଣିଥରେ ଭୁବନେଶ୍ୱର ଫେରି ଆସିବାକୁ ପଡ଼ିଲା। ସ୍ମୃତି ଓ ଅନୁଭୂତିକୁ ଅନ୍ତରରେ ସାଇତି ରଖି ଆମେ ଆମର କର୍ମମୟ ଜୀବନରେ ପୁଣି ଲାଗି ପଡ଼ିଲୁ।

ସୀମା ମିଶ୍ର
ଦାମନଯୋଡ଼ି

ଶୁଭ ଦୀପାବଳୀ

ପ୍ରଥମେ ମୋର ସମସ୍ତଙ୍କୁ ହାର୍ଦ୍ଦିକ ଶୁଭେଚ୍ଛା ଓ ଜୟ ଜଗନ୍ନାଥ। ସମସ୍ତଙ୍କର ମଙ୍ଗଳ କାମନା କରି ମୁଁ ମୋର ଏହି ଶୁଭ ଦୀପାବଳୀ ବିଷୟକୁ ଆପଣଙ୍କ ପାଖରେ ଉପସ୍ଥାପନା କରୁଛି।

ଯେ କୌଣସି ରାଷ୍ଟ୍ରର ଅଥବା ଜାତିର ସାମାଜିକ ଓ ସାଂସ୍କୃତିକ ଜୀବନରେ ଆମର ପର୍ବପର୍ବାଣୀର ସ୍ଥାନ ଅତ୍ୟନ୍ତ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ। ପର୍ବପର୍ବାଣି ମଣିଷ ଜୀବନରେ ଆନନ୍ଦ ପ୍ରଦାନ କରେ, ନବସ୍ଫୂର୍ତ୍ତି, ଜାଗୃତି, ଚେତନା ଓ ଉତ୍ସାହ ଭରିଦିଏ। ଆମ ହିନ୍ଦୁମାନଙ୍କର ପର୍ବ ଭିତରୁ ଦୀପାବଳୀ ଅନ୍ୟତମ। ଭାରତରେ ଏହା ଏକ ପ୍ରମୁଖ ପର୍ବ ରୂପେ ସ୍ୱୀକୃତ। ଜନସାଧାରଣ ଆଡ଼ମ୍ବର ସହକାରେ ଦୀପାବଳୀ ଉତ୍ସବ ପାଳନ କରିଥାନ୍ତି।

ଦୀପ ବା ପ୍ରଦୀପ ଶୁଭର ପ୍ରତୀକ। ହିନ୍ଦୁର ମାଙ୍ଗଳିକ କାର୍ଯ୍ୟରେ ଦୀପର ଆବଶ୍ୟକ ହୋଇଥାଏ। ଦୀପମାନଙ୍କର ସମୂହକୁ ଦୀପାବଳୀ କୁହାଯାଏ। କାର୍ତ୍ତିକ ଅମାବାସ୍ୟାରେ ଦୀପଜାଳି ଗୃହକୁ ଦୀପର ଆଲୋକରେ ଆଲୋକିତ କରି ଯେଉଁ ଉତ୍ସବକୁ ଆମେ ପାଳନ କରିଥାଉ ତାହା ଦୀପାବଳୀ। ଅମାରାତ୍ରିର ଘନଘୋର ଅନ୍ଧକାରକୁ ଦୀପର ଆଲୋକ ଦୂର କରେ। ଅମାବାସ୍ୟା ସହିତ ଏହି ଉତ୍ସବର ସମ୍ପର୍କ ଥିବାରୁ ଏହାକୁ ପ୍ରଦୀପ୍ତ ଅମାବାସ୍ୟା କୁହାଯାଏ। ଅନ୍ୟଭାଷାରେ ଏହି ଉତ୍ସବ ଦିୱାଲୀ ବା ଦିଆଲୀ ରୂପେ ପରିଚିତ। ମର୍ଯ୍ୟାଦା ପୁରୁଷୋତ୍ତମ ଶ୍ରୀରାମଙ୍କ ରାବଣ ବଧ ପରେ ଜନ୍ମଭୂମି ଅଯୋଧ୍ୟାକୁ ପ୍ରତ୍ୟାବର୍ତ୍ତନ କରିଥିଲେ। ସେହି ସମୟରେ ଅଯୋଧ୍ୟା ନଗରୀର ବାସିନ୍ଦାମାନେ ପ୍ରଭୁ ଶ୍ରୀରାମ, ଭାଇ ଲକ୍ଷ୍ମଣ ଓ ମାତା ସୀତାଙ୍କୁ ଭବ୍ୟ ସମ୍ବର୍ଦ୍ଧନା ଜ୍ଞାପନ କରିଥିଲେ। ଲକ୍ଷ୍ମୀପୂଜା, ଦୀପାବଳୀର ଅନ୍ୟ ଏକ ଉଲ୍ଲେଖନୀୟ ଘଟଣା। ଏହି ଦିନ ସମୁଦ୍ର ମନ୍ଥନରୁ ଦେବୀ ଲକ୍ଷ୍ମୀଙ୍କର ଆବିର୍ଭାବ ଘଟିଥିଲା। ଦୀପାବଳୀରେ ଭଗବାନ ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣ ନରକାସୁରକୁ ବିନାଶ କରି ଷୋଳହଜାର କନ୍ୟାଙ୍କୁ ମୁକ୍ତି ପ୍ରଦାନ କରିଥିଲେ।

ଅନ୍ୟ ଏକ ପୌରାଣିକ ଉପାଖ୍ୟାନ ଅନୁଯାୟୀ ବାମନଙ୍କ ଦ୍ୱାରା ପାତାଳରେ ବନ୍ଦୀ ଥିବା ଲକ୍ଷ୍ମୀ ଓ ଦେବତାମାନେ ଦୀପାବଳୀରେ ମୁକ୍ତି ପାଇଥିଲେ। ଏହି ଦିନ ଲକ୍ଷ୍ମୀ ମୁକ୍ତି ଦିବସ ରୂପେ ପରିଚିତ। ପୁନଶ୍ଚ ବାମନଙ୍କ ଦ୍ୱାରା ପାତାଳରେ ବନ୍ଦୀ ଥିବା ବଳି ନିଜର ଶୋକାର୍ତ୍ତ ପରିବାର ଓ ପ୍ରଜାମାନଙ୍କୁ ଦର୍ଶନ ଦେବା ନିମିତ୍ତ ବର୍ଷକ ଥରେ କାର୍ତ୍ତିକ ଅମାବାସ୍ୟା ତିଥିରେ ମର୍ତ୍ତ୍ୟଭ୍ରମଣକୁ ଆସନ୍ତି। ପ୍ରଜାମାନେ ଦୀପଜାଳି ତାଙ୍କୁ ସ୍ୱାଗତ କରିଥାନ୍ତି। ସେହି ସ୍ମୃତିର ସ୍ମାରକୀ ଦୀପାବଳୀ ଉତ୍ସବ ବୋଲି କୁହାଯାଏ। ଦୀପାବଳୀ ସହ କାଳୀପୂଜାର ପ୍ରଚଳନ ଭାରତରେ ବହୁ ପ୍ରାଚୀନ କାଳରୁ ପ୍ରଚଳିତ। ଭଗବାନ ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣ, ଇନ୍ଦ୍ରଙ୍କ କ୍ରୋଧରୁ ଏହିଦିନ ଗୋପବାସୀଙ୍କୁ ଉଦ୍ଧାର କରିଥିଲେ। ମହାରାଜା ଯୁଧିଷ୍ଠିରଙ୍କ ରାଜସୂୟ ଯଜ୍ଞ, ଦୀପାବଳୀରେ ସମାପ୍ତ ହୋଇଥିବା କଥା ମହାଭାରତରେ ଉଲ୍ଲେଖିତ ହୋଇଅଛି। ଆଲୋକର ପର୍ବ ଦୀପାବଳୀକୁ କାହିଁ କେତେ ଯୁଗରୁ ପାଳନ କରାଯାଉଛି। ଦୀପାବଳୀ ପାଇଁ ଲୋକଙ୍କର ଉତ୍କଣ୍ଠାର ସୀମା ନ ଥାଏ। ଉତ୍ସବ ଉପଲକ୍ଷେ ଘର ଦୋକାନ ବଜାର ସବୁ ପରିଷ୍କାର ପରିଚ୍ଛନ୍ନ କରାଯାଏ। ଓଡ଼ିଶାରେ ଘରେ ଘରେ ପିତୃପୁରୁଷଙ୍କ ଉଦ୍ଦେଶ୍ୟରେ ରାତ୍ରିରେ ଦୀପଦାନ ଶ୍ରାଦ୍ଧ ଅନୁଷ୍ଠିତ ହୁଏ। ହସ୍ତରେ ଜ୍ୱଳନ୍ତ ଆଲୋକ ଧରି ପରଲୋକଗତ ପିତୃପୁରୁଷ ଓ ଋଷିମାନଙ୍କୁ ଆବାହନ କରାଯାଏ। ବାଣ ମାରିବା ଦୀପାବଳୀକୁ ଅଧିକ ସୁନ୍ଦର କରିଥାଏ। ଆକାଶ ଗର୍ଜନ କରିଥାଏ ବାଣର ଶବ୍ଦରେ। ଅନେକ ଆକାଶ ଦୀପ ଛାଡ଼ିଥାନ୍ତି ଆକାଶକୁ। ଲକ୍ଷ୍ମୀ-ଗଣେଶ ପୂଜନ ଦୀପାବଳୀରେ ମଧ୍ୟ କରାଯାଏ। ଆନନ୍ଦ ଉଲ୍ଲାସର ଲହରି ଖେଳିଯାଏ ସମସ୍ତଙ୍କ ମନରେ। ଛୋଟରୁ ବଡ଼ ଯାଏ ସମସ୍ତେ ବାଣ ଫୁଟାଇବାରେ ମାତିଯାନ୍ତି। ସ୍ତ୍ରୀଲୋକମାନେ ପିଠା ଓ ପଣାର ଆସର ଜମେଇ ଦେଇଥାନ୍ତି। ସମସ୍ତଙ୍କୁ ପିଠା ଓ ମିଠା ଖୁଆନ୍ତି। ମହିଳାମାନେ ବହୁତ ସୁନ୍ଦର ଭାବରେ ସଜେଇ ହୋଇ ଘରେ ଓ ଘର ବାହାରେ ଦୀପ ଲଗାଇ ପରିବାରର ଶୁଭ ମନାସିଥାନ୍ତି। ଏହି ଦୀପାବଳୀରେ ଆଜିର ଦିନରେ ଧୀରେ ଧୀରେ ଲୋକେ ଦୀପ ଅପେକ୍ଷା ଲିଚୁ ଲାଇଟ୍‌ର ବ୍ୟବହାର କଲେଣି। ଏହି ଉତ୍ସବରେ ବାଣ ବିସ୍ଫୋରଣରେ ଲୋକ ମୃତ୍ୟୁବରଣ କରିବା ଓ ଆହତ ହେବାର ଦେଖାଯାଏ। ବାଣ ଫୁଟାଇବା ଫଳରେ ପରିବେଶ ଦୂଷିତ ହୋଇଥାଏ ଏବଂ ବାଣର ବିଷାକ୍ତ ଧୂଆଁରେ ଛୋଟପିଲା ଓ ବଡ଼ ଲୋକଙ୍କର ଦେହ ପାଇଁ ଏହା କ୍ଷତି ହୋଇଥାଏ। ଦେହକୁ ସୁରକ୍ଷିତ କରିବା ଆମର ଦାୟିତ୍ୱ ରହିବା ଦରକାର। ଦୀପାବଳୀ ଜାଳି ପବିତ୍ର ପରିବେଶ ସୃଷ୍ଟି କରି ନିଜ ଭିତରେ ଆତ୍ମୀୟତା ସୃଷ୍ଟି କରିବା ଓ ସମସ୍ତଙ୍କ ମଧ୍ୟରେ ସୁସମ୍ପର୍କ ସ୍ଥାପନ କରିବା ପାଇଁ ବେଶି ଆମେ ଦୃଷ୍ଟି ଦେବା କଥା। ପରିବେଶ ଆମ ସାଇ ପଡ଼ିଶା ଭଲରେ ରହିବେ ତାହାକୁ ନଜର ଦେବା ଦରକାର। ଦୀପାବଳୀ ଜାଳି ବାଣ ବ୍ୟବହାର କମ କରି ପରିବେଶକୁ ରକ୍ଷା କରିବା ଆମର ଦାୟିତ୍ୱ ତେଣୁ ମୋ ତରଫରୁ ଆପଣମାନଙ୍କୁ ଅନୁରୋଧ ଦୀପାବଳୀରେ ଦୀପ ଜାଳି ଆଲୋକ ମାଳାକୁ ସ୍ୱାଗତ କରିବା, ବାଣ ଫୁଟାଇ ପରିବେଶ ଦୂଷିତ କରିବା ପାଇଁ ଚେଷ୍ଟା କରିବା ନାହିଁ। ମୋର ଏହି ଅନୁରୋଧକୁ ଆପଣମାନେ ନିଶ୍ଚୟ ପାଳନ କରିବେ ବୋଲି ଆଶା।

ଧନ୍ୟବାଦ, ଜୟ ଜଗନ୍ନାଥ

ମମତା ରାଉତ
ଅନୁଗୋଳ

ପର ବୁଦ୍ଧି ପ୍ରଳୟ

ପର ବୁଦ୍ଧି ସର୍ବଦା ପ୍ରଳୟ ଆଡ଼କୁ ଟାଣେ,
ପର ବୁଦ୍ଧିଆ ନିଜ ଗୋଡ଼କୁ ନିଜେ ହାଣେ ।।

କଥାରେ ଅଛି ପରବୁଦ୍ଧିରେ ଘୋଡ଼ା ଚଢ଼ିବା ଅପେକ୍ଷା ନିଜ ବୁଦ୍ଧିରେ ଘାସ କାଟିବା ବରଂ ଭଲ ।

ନିୟତିର ନୀତି ଏହା ଯେ ମଣିଷ ଯେକୌଣସି କାର୍ଯ୍ୟ କରିବା ପୂର୍ବରୁ ତା' ଅନ୍ତରର ବିବେକ ଏକ ସୂଚନା ଦେଇଥାଏ । କେଉଁଟି କରିବା ଉଚିତ୍ ଏବଂ କେଉଁଟି ନ କରିବା ଉଚିତ୍ । ବିବେକୀ ପୁରୁଷ ସର୍ବଦା ନିଜକୁ ବେଶୀ ଭରସା କରନ୍ତି । ଅବିବେକୀ ପୁରୁଷ ଅନ୍ୟ ବିଚାର ଉପରେ ନିର୍ଭରଶୀଳ, ବେଳେବେଳେ ଅନ୍ୟର ଭୁଲ୍ ନିଷ୍ପତ୍ତି ପାଇଁ ମଣିଷ ଏମିତି ଏକ ଚକ୍ରବ୍ୟୁହ ଭିତରେ ଫସିଯାଏ ଯେ ସେଥିରୁ ମୁକୁଳିବା ପାଇଁ ଅନେକ କୂଟ କୌଶଳ ପ୍ରୟୋଗ ପରେ ବି ସେହି ପରିସ୍ଥିତିରୁ ମୁକୁଳିବା ଏତେଟା ସହଜ ସାଧ୍ୟ ହୋଇ ନ ଥାଏ । ସାରା ଜୀବନ ଅଶାନ୍ତି ଓ ଅବଶୋଷରେ ଅତିବାହିତ କରିବାକୁ ପଡ଼ିଥାଏ ।

ଜୀବନ ଏକ ନିର୍ଦ୍ଧାରିତ ସମୟ ଅବଧି । ସେହି ଅବଧି କାଳରେ ଜୀବନ ଟିପ୍ପଣୀ ଖାତାର ପ୍ରତ୍ୟେକ ଦିନ ଗୋଟିଏ ଗୋଟିଏ ପୃଷ୍ଠା...... ସେହି ସ୍ମୃତି ଅନୁଭୂତି ପୃଷ୍ଠାରେ ପ୍ରତିକ୍ଷଣର ସ୍ଥିତି ପରିସ୍ଥିତିର ଭାବନାତ୍ମକ ଶବ୍ଦ ଗୁଡ଼ିକର ବିଶ୍ରାମ ନେଇ ନିରବି ରହିଛନ୍ତି ପ୍ରକାଶ ଅପେକ୍ଷାରେ...

ଉପେକ୍ଷିତ ଶବ୍ଦ ସମୂହ ଲୋକ ଲଜ୍ଜାର ବହଳ ମଲାଟକୁ ଅତିକ୍ରମ କରି ଆସିବାର ବାଟ ଖୋଜୁଖୋଜୁ ଫେରିବା ସମୟର ଅବଧି ପାଖେଇ ଆସେ । ଜୀବନ ଟିପ୍ପଣୀ ଖାତାର ଶେଷ ପୃଷ୍ଠାରେ ଯେ କ'ଣ ଲେଖା ଅଛି ତାହା ହିଁ କେବଳ ଜାଣିବାକୁ ଅପେକ୍ଷା....

ଲକ୍ଷ୍ମୀପ୍ରିୟା ଶ୍ରୀଚନ୍ଦନ
ଭୁବନେଶ୍ୱର

ମାନବ ଜୀବନରେ କ୍ରୀଡାର ଉପାଦେୟତା

ଆମ ଜୀବନ ପାଇଁ କ୍ରୀଡା ଅତ୍ୟନ୍ତ ଗୁରୁତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ ଅଟେ କାରଣ ଏହା ଉତ୍ତମ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟକୁ ପ୍ରୋତ୍ସାହିତ କରେ, ଯାହାକି ମାନବ ଜୀବନ ପାଇଁ ଅତ୍ୟନ୍ତ ଜରୁରୀ । କାରଣ ଉତ୍ତମ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ହିଁ ମନୁଷ୍ୟର ପ୍ରକୃତ ସମ୍ପଦ । ଏହା କାର୍ଯ୍ୟଦକ୍ଷତାକୁ ଉନ୍ନତ କରିବାରେ ଏବଂ ଦଳଗତ କାର୍ଯ୍ୟ ଅନୁଶାସିତ ଭାବେ ପାଳନ କରିବା, ଶିଖାଇବାରେ ମଧ୍ୟ ସାହାଯ୍ୟ କରିଥାଏ ।

ଏକ ସୁସ୍ଥ ପ୍ରତିଯୋଗିତାମୂଳକ ପରିବେଶରେ ଦଳ ମଧ୍ୟରେ ଖେଳ ଖେଳାଯାଏ ଯାହା ନିଶ୍ଚିତ ଭାବରେ ଶୃଙ୍ଖଳିତ, ସକ୍ରିୟ ଏବଂ ଫିଟ୍ ରହିବାରେ ସାହାଯ୍ୟ କରେ । ଫୁଟବଲ୍, କ୍ରିକେଟ୍, ଟେନିସ୍, ସନ୍ତରଣ, ଆଥଲେଟିକସ ଇତ୍ୟାଦି ବାହ୍ୟ କ୍ରୀଡା, ଶରୀର ଏବଂ ମନକୁ ସକ୍ରିୟ ଏବଂ ନିୟୋଜିତ ରଖେ । ଚେସ୍, ବ୍ୟାଡମିଣ୍ଟନ୍, ଏବଂ ଟେବୁଲ ଟେନିସ ପରି ଇନଡୋର କ୍ରୀଡା ଦ୍ୱାରା ଆମର ଧ୍ୟାନ ସ୍ତରକୁ ବଢ଼ାଇଥାଏ ।

ଜଣେ ପ୍ରକୃତ କ୍ରୀଡ଼ାବିତ୍ ଏକ ପ୍ରତିଯୋଗିତାମୂଳକ ମନୋଭାବରେ ପରାଜୟକୁ ଗ୍ରହଣ କରନ୍ତି ଓ ପରବର୍ତ୍ତୀ ସମୟରେ ଅଧିକ କଷ୍ଟକରି ଖେଳିବାକୁ ପ୍ରେରଣା ନିଅନ୍ତି । ଆମମାନଙ୍କୁ ଘରେ, ବିଦ୍ୟାଳୟରେ, କାର୍ଯ୍ୟକ୍ଷେତ୍ରରେ ବହୁତ ସମୟରେ ଭାବପ୍ରବଣ ସମସ୍ୟାର ସଠିକ୍ ସାମ୍ନା କରିବାକୁ ପଡେ । କ୍ରୀଡା ମାଧ୍ୟମରେ ବିକାଶ କରିଥିବା କୌଶଳ ଆମକୁ ଏହି ସମୟରେ ସଠିକ୍ ନିଷ୍ପତ୍ତି ନେବାରେ ଓ ପରାଜୟକୁ ଜିତିବାରେ ସାହାଯ୍ୟ କରେ । ତେଣୁ, ଖେଳ ଏବଂ ଖେଳକୁ ଭଲ ପାଉଥିବା ଲୋକେ କଠିନ ପରିସ୍ଥିତିର ମୁକାବିଲା କରି ପାରନ୍ତି । କ୍ରୀଡା ଉତ୍ତମ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ବଜାୟ ରଖିବାରେ ସାହାଯ୍ୟ କରିବାଠାରୁ ଆରମ୍ଭ କରି ଆତ୍ମ ସମ୍ମାନ ଏବଂ ମାନସିକ ସଚେତନତା ବୃଦ୍ଧିରେ ବି ସହାୟକ ହୁଏ ।

ପ୍ରାଥମିକ ବିଭାଗରୁ ସମସ୍ତ ଛାତ୍ରଛାତ୍ରୀଙ୍କୁ ବିଭିନ୍ନ ଖେଳରେ ତାଲିମ ଦେବା ବିଦ୍ୟାଳୟ ଓ ଅନୁଷ୍ଠାନଗୁଡ଼ିକର ଦାୟିତ୍ୱ ହେବା ଉଚିତ । ଛାତ୍ର ଛାତ୍ରୀ ମାନଙ୍କୁ ସଫଳତାରେ ପହଞ୍ଚିବାରେ, ଛାତ୍ରର ମାନସିକ, ଶାରୀରିକ ଏବଂ ମାନସିକ ବିକାଶ ପାଇଁ ଖେଳଗୁଡ଼ିକ ହେଉଛି ସର୍ବୋତ୍ତମ ମାଧ୍ୟମ । ଛାତ୍ରମାନଙ୍କ ମଧ୍ୟରେ ପ୍ରତିଯୋଗିତାର ଏକ ସୁସ୍ଥ ବାତାବରଣ ଆଣିବାରେ କ୍ରୀଡା ସହାୟକ ହୁଏ । ଏହା ପ୍ରତିକୂଳ ପରିବେଶରେ ଭାରସାମ୍ୟ ସନ୍ତୁଳିତ ରଖି ସଠିକ ନିଷ୍ପତ୍ତି ନେବାର କଳା ଶିଖାଇଥାଏ ଓ ଉତ୍ତମ ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ୱ ବିକାଶରେ ସହାୟକ ହୁଏ ।

ସସ୍ମିତା ସାବତ
ଭୁବନେଶ୍ୱର

Kartik Purnima: A FestivalCelebrating the Birth of Lord Kartikeya

The full moon day in the month of November (occurs in the Hindu month of Kartik) is Kartik Purnima (Hunter's Full Moon).The event honours the birth of Lord Kartikeya (Kartik has been named from 'Kritika' nakshatra) who is also known as Murugan, Skanda, Subramanya, and many other names throughout India. He is the son of Lord Shiva and Goddess Parvati. Kartik Poornima is one of the most auspicious full moons among all other full moons. One of the reasons is moon exaltation in Kritika nakshatra and another one is its importance is that Kritika nakshatra is ruled by Sun, which is the significator (Karak) of our soul. Therefore, Sun along with Moon i.e. soul along with mind rules this auspicious full moon.

Kartik Poornima is an auspicious day to initiate any activity, which can boost the stability of mind. Other names of Kartika Purnima are Tripurari Purnima, Deva Diwali, Tripuri Purnima etc.

Kartik month is most suitable spiritually for any devotee to carry out any Sadhana or puja. Kartik Snan (ritual bath in Kartik month) is one of the most well-known Hindu traditions because water in rivers, lakes, and ponds acquires a holy capacity to destroy negative effects throughout the month.

Kartik Snan, Vishnu Puja, Kartik Somvar Vrat dedicated to Lord Shiva, Kartik Deeparadhana (lighting the lamps or diayas), Tulsi Puja, Vanabhojan (garden parties), Kartik Purana Parayana, and charitable giving of food and clothing to the needy are the principal rites of this month.

The most important activity on the auspicious day of Kartik Poornima is to spare some time with the full moon and strengthen your mind with the positive rays of moon.

In Odisha - Kartik Purnima : A boat festival

Kartik Purnima is believed to be the birth day of Matsya (the fish incarnation of lord Bishnu), Vrinda (tulsi plant) and Kartikeya (the god of war). Kartika Purnima is the last day of Kartika month, also called the 15th lunar day of Kartik Mas, this year it falls on Monday, 27th Nov 2023.

Kartik Purnima is also known as the Boita Bandana or Boat festival in the state

of Odisha. Odia people celebrate this to remember and recall the old tradition of doing business in Boita (a gigantic boat) in other countries.Men, women, and children celebrate the festival by setting afloat miniature boats to mark the occasion. It is a tradition that has been followed for many years. Early in the morning, on Kartik Purnima, people make their way to different water bodies to set afloat boats which are traditionally made up of banana stems and banyan leaves. In urban areas, it's made of paper. The boats are floated with lighted lamps, betel leaves, flowers, milk, cracker fruits, and coins to mark a thousand years old boat festival. It is believed that our ancestors used to take boats to Indonesia to bring items for the state. Along with- it people also perform religious rituals to take a holy dip. Many devotees also believe that this tradition is meant to offer prayers to their ancestors and seek their blessings.

Goddess Mahalaxmi is worshiped by Odia people to bless us for good harvesting in the coming month. Goddess Laxmi is worshipped with Lord Ganesha and Lord Kartikeya. This is also the day where soil is auspiciously taken out for upcoming "Kartikeswar Puja".

Kartik Purnima is a five-day festival. It is on Prabodhani Ekadashi that the main celebration starts. This marks the awakening of the Gods who had descended on the earth. This also marks the end of Chaturmas, which is a four-month period when Lord Vishnu was asleep. Hindus celebrate Ekadashi on the eleventh day of Shukla Paksha and Purnima on the fifteenth day.

During Kartika month, majority of the Hindu population of Odisha becomes strictly vegetarian. They observe the month with auspicious customs, continuing till the traditional ceremony of Panchuka which falls on the last five days of the month. The Kartika month ends on Kartika Purnima. The day after Kartika Purnima is called Chhada Khai when people can again start non-vegetarian food

Morning Puja and Evening Puja:

There are different rituals for this puja in different parts of Odisha.

- In the morning after bathing we wear new clothes and make food offerings to the Sun by performing the 'Janhi Osa' where we offer to the sun god, palmful of 'khae' with 'janhi' cucumber, banana, coconut, betel nut.
- We keep fast whole day, at the evening when Moon comes out we worship Moon.
- After the morning puja. We wait for Full moon in the evening. When it comes out, we lighten a Diya, Dhupa (Insense Stick) Jhuna, Aalati etc. Puja

finishes with the sound of Huluhuli and Sankha.

- A special thing about this puja is, decoration of Chounra with different colours of flowers like Rangani and Haragoura.
- And after that we make a mixture of water, urmeric, Duba ghasa and Barakoli patra (Berry leaves) and offer to moon.
- After finishing the puja, we distribute Prasad among neighbours.
- Puchi khela known as the signature of Kumara Purnima. In villages, 'Puchi' competitions are held in the moonlight.

Swayam Prabha Devi

Angul

KARWA CHAUTH

Karwa Chauth is a symbol of the deep love and commitment that married woman have to their husbands. Karwa Chauth is a prominent Hindu Festival. According to the Hindu calendar, the festival occours in the Kartik month on the fourth day after the full moon.

'Karwa' means earthen pots, "Chauth" means the fourth day. This day is celebrated with the belief that it emulates goddess Parvati, who observed a fast to obtain Lord Shiva as her husband.

Karwa Chauth is a one day festival celebrated annually by married women in which they observe a fast from sunrise to moonrise and pray for the well-being and longivity of their husbands.

The festival is also observed by unmarried women who pray in the hope of securing a desired life partner. On this day the women are dressed up as a bride and narrate the Karwa Chauth's Katha in the evening. After seeing the moon at night women break their fast and drink water from their husband's hand and eat food. Karwachauth festival, symbolising the love between a husband and wife and makes their relation stronger.

Shelly Rana

Bhubaneswar

SAY NO TO CORRUPTION: COMMIT TO THE NATION

Introduction

Corruption remains a pervasive issue in many parts of the world, draining resources, distorting markets, and undermining public trust in institutions. It is a serious obstacle to sustainable economic growth, skewing competitive processes, increasing poverty and inequality, and ultimately threatening the long-term prosperity of nations. To overcome this challenge, it's imperative for policymakers, businesses, and individuals alike to join forces in negating corruption and committing themselves fully to serving their nations' best interests.

Corruption often starts with seemingly innocuous compromises, small favours exchanged under the table, or turning blind eyes to questionable dealings. However, these minor indulgences gradually snowball, setting norms permitting ever more brazen malfeasance until whole systems become mired in graft and deceit. Therefore, it falls upon each individual to draw a line in the sand and steadfastly refuse participation in such acts, no matter how trivial they may appear initially. By saying "no" to corruption consistently, we set an example that encourages others around us to do the same.

Furthermore, resisting corruption proves our dedication to nation-building and genuine progress. We demonstrate that we prioritize the general good above selfish gains when we decline offers of illicit enrichment or opportunities advanced by cronyism. Our integrity strengthens public institutions, fostering an environment where legitimate entrepreneurs thrive without fear of being undercut by dishonest competitors. More vital resources reach areas such as healthcare, education, and law enforcement, leading to tangible improvements felt by citizens directly. By choosing not to be part of the problem, we become part of the solution instead.

Let's take a closer look at why it's so crucial to address corruption and how everyone can play a role in building cleaner & more resilient economies.

Economic Impacts of Corruption

Corruption takes many forms, from bribery and embezzlement to nepotism and extortion. While it might seem like a quick fix for obtaining favourable treatment or boosting profits, the adverse effects quickly & create a multiplier effect.

Here are some key ways corruption weakens economies:

- Market Distortion: Corruption tips the scales in favour of certain players, warping fair competition. Innovation suffers, and those who don't play by the rules are pushed out, stifling innovation. This leads to suboptimal resource allocation, further slowing economic growth.
- Reduced Foreign Direct Investment & FIIs: Companies looking to invest abroad are deterred by corruption climates, fearing unfair practices and difficulty resolving disputes. Lower FDI & FII levels deprive countries of valuable capital influxes needed for infrastructure development, technology transfer, and job creation.
- Inequality: Corruption aggrandizes wealth disparities by providing opportunities for the connected few to amass riches at the expense of others. Unequal distribution of resources causes social unrest and poverty, ultimately threatening the long-term viability of affected nations.
- Institutional Erosion: Entrenched corruption erodes confidence in institutions responsible for safeguarding the rule of law and protecting property rights. Such breakdowns encourage illegal activities, weaken contract enforcement, and diminish trust among entrepreneurs, consumers, and investors.

Why Saying "No" Matters Rejecting corruption isn't just a moral duty; it makes perfect economic sense. Cleaner environments attract more domestic and international investment, promote fair competition, and spur sustainable growth. Companies that operate ethically lower operational risks, enjoy better brand recognition, and recruit talented employees motivated by something beyond personal gain. Individuals may experience short-term advantages from corrupt deals, but ultimately pay a steep price as corrosive corruption climbs erode their quality of life and dim long-term prospects.

Tangible Steps towards Positive Change

The quest to stamp out corruption requires active involvement from all segments of society. Policymakers need to fortify institutions charged with battling graft, expand transparency, enhance accountability mechanisms, and streamline regulatory procedures to discourage rent seeking. Business leaders should infuse anti-corruption initiatives into their organizational DNA via employee training programs, third-party auditing, and ethical codes of conduct. Civil society can mobilize awareness drives highlighting corruption's downsides, monitor government endeavours to counter corruption, and report suspect happenings. Lastly, individuals can choose to live by exemplary ethical standards and speak

out against wrongdoing they witness. Seemingly small acts of everyday heroism embolden others to follow suit, producing a cascading effect that gradually shifts the cultural terrain. Every "no" uttered against bribery, embezzlement, or favouritism reverberates loudly and may encourage someone else to adopt similar principled stances.

Conclusion:

A Pathway to Resilience & Prosperity Commitment to combating corruption and embracing integrity lies at the heart of a durable economic vision. It calls for persistent unity and purpose among administrations, enterprises, and ordinary folk desiring a brighter future for coming generations. While severing corrupt ties triggers temporary pain, particularly for players entrenched in old habits, the dividends gained through revitalized trust, increased productivity, and heightened investment prove worthwhile over the long haul. Emboldened by a shared desire for sustainable prosperity and cleaner prosperity, each of us can decisively declare, "No!" to corruption and embark on the transformative journey towards a stronger & more resilient nation. This call to action resonates far beyond anticorruption initiatives alone. It extends into broader spheres where personal interests collide with the greater good. From politics and economic affairs to urbanization and globalization, similar crossroads present themselves daily, posing stark choices between convenient shortcuts and hard-won progress predicated on ideals such as truth, openness, and respect for human dignity. Choose right, and each microscopic victory charts a course toward meaningful improvement in the human condition, effectively denying space for destructive influences to captivate susceptible minds and societies.

Dr. Shikta Singh
Bhubaneswar

KARTIK PURNIMA
Celebrating Luminescence

The earthly Deepavali
precedes Dev Deepavali,
celebratory, auspicious
and holy.

Celebrations abound as
divine benediction is
earth bound.
Ushering in the message so clear,
the good and noble have
triumphed over
the evil and vile.

Morning arrives in elan
with 'boita bandana'
carried out by one and all,
the wintry breeze brings alive
the memories of maritime trade
by traders of Utkal's yore.

The sky reverberates
with chantings pious,
enlivening thus
the day's ambience.

The holy dip purges
and purifies
the prayerful mortals' lives.

The luminescence of
Kartik Purnima
pertinent and meaningful
with shimmering lamps
all around, with the moon
above in glow profound
inspire humankind to
dispel darkness,
the darkness of envy,
hatred, indifference,
arrogance and ignorance.

Sujata Pani
Damanjodi

FRIENDSHIP

Frienships are important relationships throught a person's life span. Friendship, is a state of enduring affection, love, esteem, intimacy and trust between two people known to each other. It is recognised by both members of the relationship and characterised by a bond or tie of reciprocated affection.

In western societies, friendships are one of the least prescribed close relationships with no formal duties or legal obligations to one another.

It is a stronger form of interpersonal bond than an "acquaintance" or an "Association" such as a classmate, neighbour, coworker, or colleague. If you find yourself in a friendship with more negative traits than positive ones, it might be worth re-evaluating the relationship.

Good friends always make life healthy and wealthy. Some characteristics of good friends:

1. Trustworthiness: A good friend is honest and keeps their promises, making you feel secure.

2. Empathy- They are understanding and able to input themselves in your shoes, providing emotional support during difficult times.

3. Respect- A good friend respects your opinions boundaries and values.

4. Reliability- They are dependable and can be counted on when you need them both in good and bad times.

5. Communication- Open and effective communication is a hallmark of a good friend.

6. Celebrating success- They genuinely celebrate your achievements and success.

7. Listening- A good friend actively listens to you.

8. Selflessness- They consider your needs and feelings, showing care and concern without expecting something in return.

9. Forgiveness:- They are willing to forgive mistakes and work through disagreements.

Friendships, in a nutshell play an important role in healthy human development and adjustment across the life span. Friendships exist in every stage of development, although the form they take varies considerably with age. The maintenance phase of friendship involves engaging in interactions that serve to sustain the relationship. Friends engage in a variety of behaviours to maintain their relationship such as sharing interests doing recreational or leisure activities together and exchanging support and advice. So lastly friendship makes life easy, happy and healthy.

Swati Sahoo

xxxx

TOUCHING LIVES

भुवनेश्वर

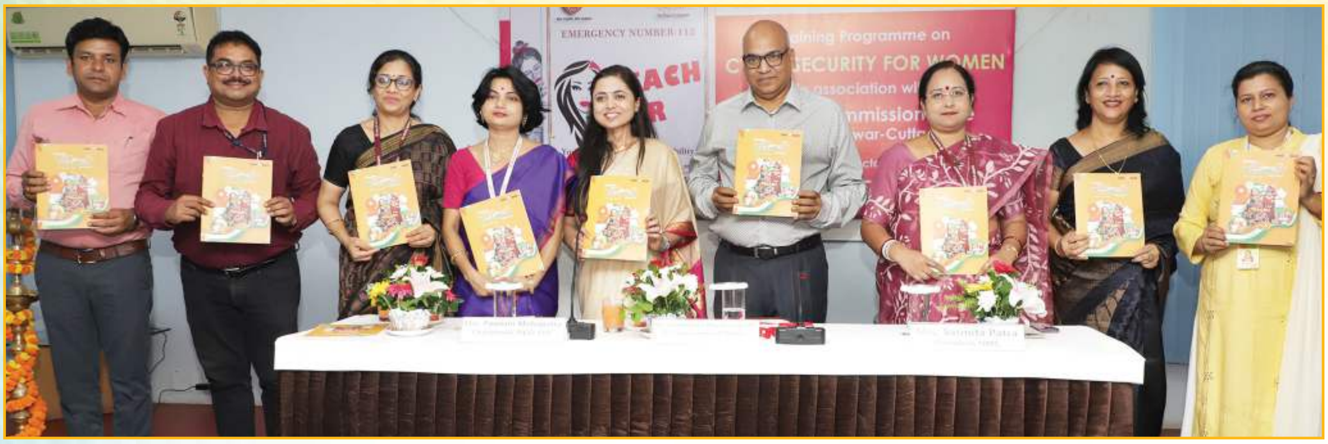

तिमाही पत्रिका 'संगिनी' के जुलाई – सितम्बर अंक का विमोचन करते हुए अतिथिगण एवं सम्पादक मण्डल के सदस्य

सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री सोमेंद्र प्रियदर्शनी, भा.पु.सं., पुलिस आयुक्त का स्वागत करती हुई नालको महिला समिति की अध्यक्षा श्रीमती सस्मिता पात्रा

सुश्री अंजना टुडू ,सहायक पुलिस आयुक्त साइबर क्राइम के बारे में नालको की महिलाओं को जागरुक करते हुए

महिलाओं हेतु ब्रेस्ट कैंसर जागरूकता कार्यक्रम के दौरान अपना मंतव्य रखती हुईं नालको महिला समिति की अध्यक्षा श्रीमती सस्मिता पात्रा

नालको महिला समिति की सचिव श्रीमती शाश्वती मोहन्ति को मान पत्र प्रदान करती हुए नालको महिला समिति की अध्यक्षा श्रीमती सस्मिता पात्रा

‘स्वच्छ दिवाली - शुभ दिवाली’ उत्सव को बच्चों के साथ मनाते हुए नालको के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री श्रीधर पात्र और नालको महिला समिति की अध्यक्षा श्रीमती सस्मिता पात्रा

नवरात्रि के पावन उत्सव पर अनाथ कन्याओं का पूजन करती हुई नालको महिला समिति की सदस्याएँ एवं अध्यक्षा श्रीमती सस्मिता पात्रा

नालको महिला समिति द्वारा अनाथ बच्चों हेतु आयोजित स्वास्थ्य शिविर के दौरान श्रीमती सस्मिता पात्रा, अध्यक्षा, नालको महिला समिति

स्वच्छता ही सेवा अभियान को आगे बढ़ाते हुए ‘आशा किरण कन्या आश्रम’ को कूड़ादान प्रदान करते हुए नालको महिला समिति की सदस्याएँ एवं अध्यक्षा श्रीमती सस्मिता पात्रा

बाली गाँव (पुरी) में सरकारी विद्यालय के बच्चों के क्रिसमस को हर्षोल्लास पूर्वक मनाते हुए नालको महिला समिति की सदस्याएँ एवं अध्यक्षा श्रीमती सस्मिता पात्रा

अनुगुळ

नालको लेडिज क्लब, अनुगुळ द्वारा आयोजित कार्यक्रम के दौरान अभिनेता श्री पृथ्वीराज सतपथी तथा अभिनेत्री सुश्री नैना दास का स्वागत

नालको लेडिज क्लब, अनुगुळ द्वारा बाल दिवस समारोह का आयोजन

ओलम्पियन सुश्री अनुराधा बिस्वाल के साथ फिटनेस कार्यक्रम – 'हम फिट तो इंडिया हिट' में प्रतिभागिता करती हुई नालको लेडिज क्लब, अनुगुळ की सदस्याएँ

अपनी वरिष्ठ सदस्या श्रीमती सबिता महान्ति का स्वागत करती हुई नालको लेडिज क्लब, अनुगुळ की सदस्याएँ

नालको लेडिज क्लब, अनुगुळ की सदस्याओं द्वारा नवरात्रि पर्व का आयोजन

बच्चों हेतु प्रतियोगिता का आयोजन करती हुई नालको लेडिज क्लब, अनुगुळ की सदस्याएँ

दामनजोड़ी

हर्ष व उल्लास के साथ दीपावली मनाते हुए नालको लेडिज क्लब, दामनजोड़ी की सदस्याएँ

नालको लेडिज क्लब, दामनजोड़ी द्वारा आयोजित पुष्प प्रतियोगिता के दौरान निर्णायक मंडल के सदस्य

नालको लेडिज क्लब, दामनजोड़ी द्वारा आयोजित पुष्प प्रतियोगिता की प्रविष्टियाँ

नालको लेडिज क्लब, दामनजोड़ी की सदस्या श्रीमती सरिता जयसवाल तथा श्रीमती रेनुबाला मिश्रा का अभिनन्दन समारोह

नालको लेडिज क्लब, दामनजोड़ी की सदस्याएँ घरेलू सहायकों के बच्चों के साथ क्रिसमस का त्योहार मनाते हुए

Readers are requested to send their write ups, suggestions and feedback to nmssangini@gmail.com in clear handwriting or soft copy before 15th February 2024 - Editor-in-Chief

नालको NALCO

National Aluminium Company Limited

Born in ODISHA..
Grown in ODISHA..
Globally Represents ODISHA...

No. 1 Lowest Cost Producer of Alumina in World

No. 1 Lowest Cost Producer of Bauxite in World

2nd Highest Net Foreign Exchange Earning CPSE in the Country

NALCO

THE INDUSTRIAL KONARK OF ODISHA

Designed and printed by sanket